।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन। राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण

भाद्रपद कृ.६ युगाब्द ५११६, वि.२०७४

१६ अगस्त २०१७

वर्ष ३३ : अंक १०

अपनी बात

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

पाथेय कण एवं आपके पत्रों के माध्यम से आपका और हमारा संवाद निरंतर बना रहता है। अधिकांश पाठक पाथेय कण पढ़कर स्थानीय स्तर पर इसकी चर्चा एवं विचार करते हैं। संवाद बनाये रखने के लिए आपके पत्र हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

अतः आपके पत्र हमें लगातार मिलते रहें। पत्रों के माध्यम से हमें अंक में और अधिक सुधार करने का अवसर मिलता है। आप अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से भी भेज सकते हैं। हमारा ई-मेल इस प्रकार है- patheykan@gmail.com

इसी आशा के साथ।

जय श्रीराम।

आपका

सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष	₹ 100/-
पन्द्रह वर्ष	₹ 1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334
Website: www.Patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

भारत का राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्'

वन्दे मातरम् भारत का राष्ट्रगीत है। इस गीत की रचना संस्कृत बांग्ला मिश्रित भाषा में बंकिम चन्द्र चटर्जी ने १८७५ में की जिसमें मातृभूमि की वन्दना की गई है। १८८२ में उनका उपन्यास आनन्द मठ प्रकाशित हुआ, उसमें भी मातृभूमि के प्रेम से ओतप्रोत इस गीत को स्थान दिया गया। सन् २००२ में बी.बी.सी. वर्ल्ड सर्विस द्वारा दस सबसे लोकप्रिय गीतों के चयन हेतु दुनिया भर के ७००० गीतों को चुना गया, जिस पर १५५ देशों के लोगों ने मतदान किया था, उसमें शीर्ष के १० गीतों में 'वन्दे मातरम्' गीत दूसरे स्थान पर था।

सन् १८७०-८० के दशक में ब्रिटिश शासकों ने सरकारी समारोहों में 'गॉड सेव द क्वीन' गीत गाया जाना अनिवार्य कर दिया था। अंग्रेजों के इस आदेश से बंकिम बाबू जो उन दिनों डिप्टी कलेक्टर के पद पर कार्यरत थे, बहुत आहत हुए और संभवतः इसके विकल्प के तौर पर उन्होंने एक नये गीत की रचना की और इसे शीर्षक दिया 'वन्दे मातरम्'। गीत में कुल ५ पद हैं, जिसमें मुखड़ा एवं शुरुआत के २ पद संस्कृत में तथा शेष ३ पद बांग्ला भाषा में रचे गए। १९०६ में रविन्द्र नाथ टैगोर ने इस गीत का देवनागरी में अनुवाद किया। १९०९ में महर्षि अरविन्द ने इसका अंग्रेजी गद्य तथा पद्य में अनुवाद किया। १५ अगस्त १९४७ को प्रथम स्वाधीनता दिवस समारोह का प्रारम्भ 'वन्दे मातरम्' गीत से हुआ।

स्वतंत्रता आन्दोलन का मंत्र

'वन्दे मातरम्' इन दो शब्दों ने हमारे स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान विभिन्न रैलियों में जोश भरने के लिए यह गीत गाया जाता था तथा दिन प्रतिदिन आमजन में इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई। सन् १८९६ में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने यह पूरा गीत अपने स्वर में बंगाली शैली में लय तथा संगीत के साथ गाया। १९०१ के कलकत्ता में ही एक अन्य अधिवेशन में श्री चरणदास ने यह गीत पुनः गाया। सन् १९०५ के बनारस अधिवेशन में इस गीत को सरला देवी चौधरानी ने गाया। दिसम्बर १९०५ में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में इसे राष्ट्रगीत का स्थान दिया गया और तब से कांग्रेस अधिवेशन की शुरुआत **वन्दे मातरम्** से होने लगी।

सन् १९०५ में लार्ड कर्जन ने एक मुस्लिम बहुल प्रान्त का सृजन करने के उद्देश्य से तत्कालीन बंगाल प्रान्त को दो भागों में बांट दिया। यह अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' वाली नीति का ही परिणाम था। सारा जनमत इस बंग-भंग का विरोधी था। बंग-भंग के विरुद्ध भारी जन आन्दोलन हुआ और 'वन्दे मातरम्'इसका सूत्रधार बना। तब

स्वदेशपतितं कष्टं दूरस्था लोकयन्ति ये।
नैव च प्रतिकुर्वन्ति ते नराः शत्रुनन्दनाः।।

जो लोग स्वदेश पर आये हुये संकट को दूर खड़े होकर देखते हैं तथा उस संकट को दूर करने के लिए किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं करते ऐसे लोग शत्रु से भी अधिक घातक होते हैं।

(सूक्ति सुधा १४/५)

आवरण पृष्ठ का चित्र परिचय- ऊपर से खुदीराम बोस, अनंत लक्ष्मण कान्हरे, अशफाक उल्ला खाँ, मदन लाल धींगरा तथा पं.रामप्रसाद बिस्मिल।

से १९३० के नमक सत्याग्रह और १९४२ के 'भारत छोड़ो आंदोलन' तक सभी सम्प्रदायों, पंथों के युवा स्वतन्त्रता सेनानियों का सबसे प्रिय और प्रेरक नारा रहा 'वन्दे मातरम्'।

लाठियाँ खाते हुए भी वन्देमातरम्

७ अगस्त १९०५ को बंग–भंग का विरोध करने जुटी भीड़ के बीच किसी ने कहा– वन्दे मातरम् और चमत्कार घट गया। हजारों लोगों का समवेत स्वर गूंज उठा। इस तरह अचानक ही वन्दे मातरम् और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को उसका प्रयाण गीत मिल गया। १९०६ में अंग्रेज सरकार ने जनमानस में इसकी लोकप्रियता के कारण **वन्दे मातरम्** को किसी अधिवेशन, जुलूस या सार्वजनिक स्थान पर गाने पर प्रतिबंध लगा दिया। अंग्रेज सरकार के प्रतिबन्धात्मक आदेश की अवज्ञा करते हुए प्रसिद्ध स्वतंन्त्रता सेनानी सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, अश्विनी कुमार दत्त, विपिन चन्द्र पाल, कृष्ण कुमार मिश्र, अब्दुल रशीद, अरविन्द घोष, आनन्द चन्द्र राई और अमृत बाजार पत्रिका के सम्पादक मोतीलाल घोष आदि ने १४ अप्रेल १९०६ को बारीसाल में आयोजित राज्य परिषद के प्रांतीय अधिवेशन में आए हजारों प्रतिनिधियों के साथ एक जुलूस वन्दे मातरम् के बेज लगाए हुए निकाला। पुलिस द्वारा भयंकर लाठी चार्ज हुआ और सैकड़ों लोग रक्त रंजित होकर सड़कों पर गिर पड़े। विशेष बात यह थी कि लाठियां खाते खाते भी इन स्वतन्त्रता के दीवानों के मुख से वन्दे मातरम् का घोष अनवरत चलता रहा।

बंकिम चन्द्र चटर्जी

अगले दिन अधिवेशन फिर वन्दे मातरम् गीत से ही शुरु हुआ। क्रांति की आग धधका कर वन्दे मातरम् ने देश को क्या दिया, इसके बारे में महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट किया कि उसने हमें श्वान वृत्ति त्याग कर सिंह स्वभाव से लड़ने का तरीका सिखाया। इस मंत्र के उद्‌गार से पूर्व उस समय चालू राजनीतिक आंदोलन की पद्धति खोखली और निरर्थक सिद्ध हो चुकी थी। वन्दे मातरम् स्तवन में बंकिम चन्द्र की **कल्पित माता के कोटि हाथों ने तलवार धारण की थी, भिक्षा का कटोरा नहीं।**

दैनिक भी वन्देमातरम्

ऐसा नहीं है कि वन्दे मातरम् केवल कांग्रेस के अधिवेशनों में ही गाया जाता था। ६ अगस्त १९०६ को कलकत्ता से वन्दे मातरम् के नाम से एक अंग्रेजी दैनिक निकाला गया जिसने स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके संस्थापक थे श्री बिपिन चन्द्र पाल सुप्रसिद्ध 'लाल–बाल–पाल' त्रयी में से एक। बाद में महर्षि अरविन्द घोष ने इस दैनिक का सम्पादन किया। भगिनी निवेदिता ने प्रतिबंध के बावजूद निवेदिता गर्ल्स स्कूलों में वन्दे मातरम् को दैनिक प्रार्थनाओं में शामिल किया। भगिनी निवेदिता ने जो राष्ट्र ध्वज तैयार किया था इस पर भी वन्दे मातरम् लिखा था। १९०७ में जर्मनी के अधिवेशन में श्यामजी कृष्ण वर्मा, मैडम कामा, लाला हरदयाल आदि भाग ले रहे थे तब जिस ध्वज को मैडम कामा ने फहराया, उसके मध्य में भी वन्दे मातरम् देवनागरी में अंकित था। लाला लाजपत राय ने लाहौर में जिस जर्नल का प्रकाशन शुरु किया, उसका नाम भी वन्दे मातरम् रखा। अंग्रेजों की गोली का शिकार बनकर दम तोड़ने वाली आजादी की दीवानी मातंगिनी हाजरा की जुबान पर आखिरी शब्द वन्दे मातरम् ही थे। मदन लाल ढींगरा, प्रफुल्ल चाकी, खुदीराम बोस, सूर्यसेन, राम प्रसाद बिस्मिल और अन्य बहुत से क्रांन्तिकारियों ने वन्दे मातरम् का जयघोष कर फाँसी के फन्दे को चूमा। भगत सिंह अपने पिता को पत्र वन्दे मातरम् से अभिवादन कर लिखते थे। सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिंद फौज ने इस गीत को अंगीकार किया और सिंगापुर रेडिया स्टेशन से इसका प्रसारण होता था। काकोरी के शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल की प्रतिबन्धित पुस्तक 'क्रांन्ति गीतान्जलि' में पहला गीत 'मातृ वन्दना' वन्दे मातरम् ही था।

राष्ट्रगीत खण्डित हुआ

१९०६ से १९११ तक यह वन्दे मातरम् गीत पूरा गाया जाता था। इस मन्त्र में यह ताकत थी कि बंगाल का विभाजन अंग्रेज सरकार को वापस लेना पड़ा। लेकिन मुस्लिम कट्टरवाद तथा कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति ने इसे अपने मूल स्वरूप में (अखंडित) नहीं रहने दिया। १९२३ के काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष मौलाना अहमद अली ने पहली बार इसका विरोध किया। उस अधिवेशन में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पुरोधा पं.विष्णुअवतार पलुस्कर वन्दे मातरम् गा रहे थे, किन्तु अध्यक्ष ने उन्हें बीच में टोका। लेकिन पं. पलुस्कर ने बीच में रुक कर इस महान गीत का अपमान नहीं होने दिया और गान पूरा करके ही रुके।

मुसलमानों की आपत्तियों का निवारण (वास्तव में मुस्लिम तुष्टीकरण) करने हेतु कांग्रेस ने १९३७ में रवीन्द्र नाथ टैगोर के मार्गदर्शन एवं जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया, जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद भी थे। इस समिति ने पाया कि इस गीत के शुरुआती दो पद तो मातृभूमि की प्रशंसा में कहे गए हैं। किन्तु बाद के पदों में हिन्दू देवी देवताओं (देवी दुर्गा) का जिक्र होने लगता है। इसलिये यह निर्णय लिया गया कि इस गीत के शुरुआती दो पदों को ही राष्ट्रगीत के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा। समिति ने अपनी रिपोर्ट में इस राष्ट्रगीत के गायन को अनिवार्य बाध्यता से मुक्त रखने को कहा।

इस प्रकार स्वाधीनता संग्राम में इस गीत की निर्णायक भागीदारी के बावजूद जब राष्ट्रगान के चयन की बारी आई तो वन्दे मातरम् के स्थान पर रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा रचित जन गण मन को वरीयता दी गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद डा.राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में २४ जनवरी १९५० को 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाने सम्बन्धी निम्न वक्तव्य पढ़ा जिसे

वन्दे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलय़जशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। १।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। २।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।। ३।।

तुमि विद्या तुमि धर्म,
तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदय़े तुमि माँ भक्ति,
तोमारेई प्रतिमा गढि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम ।। ४।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।। ५।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। ६।।

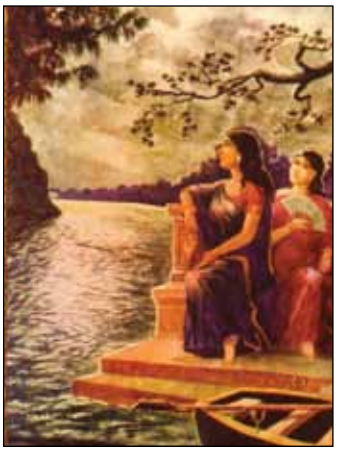

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्

के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्

नमामि तारिणीम्

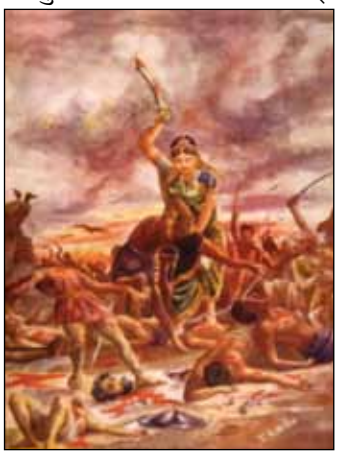

रिपुदलवारिणीं मातरम्

चित्रकार – श्री तेजेन्द्र कुमार मित्रा (सन् १९२३ में प्रकाशित ''वन्दे मातरम् चित्राधार'' से साभार)

स्वीकार कर लिया गया –

'' शब्दों व संगीत की वह रचना जिसे जन गण मन से सम्बोधित किया जाता है, भारत का राष्ट्रगान है; वन्दे मातरम् गान जिसने कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है; को जन गण मन के समकक्ष सम्मान व पद मिले। मैं आशा करता हूँ कि यह सदस्यों को सन्तुष्ट करेगा।''

उच्च न्यायालय का फैसला

राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् (मूल) की भाषा सम्बन्धी एक याचिका पर २५ जुलाई २०१७ को निर्णय देते हुए मद्रास उच्च न्यायालय ने वन्दे मातरम् को तमिलनाडु की सभी शिक्षण संस्थाओं में सप्ताह में कम से कम एक दिन तथा सरकारी संस्थाओं, प्राइवेट कम्पनी, फैक्ट्री में महीने में कम से कम एक दिन गाया जाना अनिवार्य करने के निर्देश दिये हैं। न्यायालय ने राष्ट्र गीत को तमिल और अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करके अपलोड करने तथा सभी सरकारी वेब साइट और सोशल मीडिया पर इसकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिये हैं।

न्यायालय के अनुसार युवा इस देश का कल (भविष्य) हैं तथा उन्हें आशा और विश्वास है कि इस महान देश के नागरिकों द्वारा इस आदेश को सही भावना में समझा तथा क्रियान्वित किया जायेगा।

पिछले कुछ समय से मुस्लिम तथा अन्य सेकुलरवादी नेता घोषणाऐं कर रहे हैं कि हम राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् नहीं गायेंगे क्योंकि इसमें मातृभूमि को नमन (सजदा) करने की बात कही गई है। जबकि हिन्दू इसे अपनी मातृभूमि, देवभूमि, कर्मभूमि मानता है, उसके सामने नत मस्तक होता है, उसके चरणों में माथा टिकाता है और आत्म बलिदान का संकल्प करता है। इतिहास साक्षी है कि इस गीत ने हमें स्वतंत्रता दिलाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है, जिसके कारण आज हम एक राष्ट्र के रूप में स्वतन्त्र जीवन जी रहे हैं। अतः देश के सभी नागरिकों का दायित्व है कि इस राष्ट्रगीत का इसके मूल स्वरूप में गायन करें तथा इसी (मूल) स्वरूप में राष्ट्रगीत को संवैधानिक मान्यता दिलाने की दिशा में प्रयत्न करें।

– मेघराज खत्री

ऐसे थे अपने दीनदयाल जी

बड़ी सहजता से वे संगठन का पाठ पढ़ा देते थे

सन् १९५० के शारीरिक शिक्षण वर्ग के पश्चात पं. दीनदयाल जी का केन्द्र मेरठ कर दिया गया था। उस समय मैं कॉलेज विद्यार्थी था। कभी-कभी पंडित जी से संघ कार्यालय में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता था। एक बार मुलाकात के दौरान बातचीत में साम्यवाद पर चर्चा होने लगी। चर्चा के बाद उन्होंने मुझे 'कम्युनिज्म' नामक पुस्तक को पढ़ने का सुझाव दिया। इस पुस्तक के लेखक आर्य समाज के कार्यकर्ता पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय थे। मेरठ में उपलब्ध नहीं होने के कारण मैंने दिल्ली से मंगवा कर उस पुस्तक को पढ़ा। विद्वान लेखक ने इस पुस्तक में साम्यवाद पर सारगर्भित लेख लिखा था। आश्चर्य होता है कि सन् १९५० के पहले ही उन्होने यह दर्शा दिया था कि साम्यवाद की धारणा जो कि सोवियत रूस ने प्रस्तुत की थी, असफल होगी। उससे भी आश्चर्य की बात यह थी कि पश्चिम उत्तरप्रदेश के बीस जिलों में संघ कार्य देखने वाले पंडित जी छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं का इतना ध्यान कैसे रखते थे?

ऐसे ही एक बार पं. दीनदयाल जी का प्रवास एक शाखा पर रखा गया। सायं शाखा के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक में मुख्य शिक्षक ने अपनी शाखा का वृत दिया। उसके पश्चात जो खड़े हुए वो भी मुख्य शिक्षक थे, उनको तो दीनदयाल जी ने बैठा दिया और पहले वाले मुख्य शिक्षक से दीनदयाल जी ने पूछा- ''आपके कार्यकर्ता कहाँ हैं?'' उत्तर मिला कि-''कोई कार्यकर्ता नहीं है''

इस पर दीनदयाल जी ने पूछा-'' ऐसा कैसे?''

मुख्य शिक्षक ने जवाब दिया-''कार्यकर्ता की योग्यता वाला कोई भी न होने के कारण मैंने कोई कार्यकर्ता नहीं बनाया।''

इस पर दोबारा दीनदयाल जी ने पूछा-''शाखा से पूर्व या बाद में आप कुछ लोगों से मिलते होंगे?''

उत्तर आया-''चार-पाँच से मिल लेता हूँ।''

दीनदयाल जी ने कहा-''आपने अपनी शाखा की उपस्थिति २५ बताई थी। उनमें से २० लोग तो बिना संपर्क के आ जाते हैं। यदि आप कार्यकर्ता की योग्यता १ रुपया मानते हैं, और स्वयं सेवक की योग्यता १ आना (उस समय रुपये में १६ आने/६४ पैसे हुआ करते थे) तो उसको १ रुपये की योग्यता वाला काम बता दीजिये, और अपेक्षा यही रखिये कि वह काम १ आने का ही करेगा। अपना प्रयास यह रहे कि कैसे वह अपनी योग्यता १ आना से २ आना, ३ आना, ४ आना करके बढ़ाता रहे, और अधिकाधिक योग्य बनता रहे। कुछ समय बाद आप देखेंगे कि योग्यता से परिपूर्ण अनेक कार्यकर्ता आप के साथ खड़े हैं।

***-सत्यपाल शर्मा,** जयपुर*

आगामी पक्ष (१ से १५ सितम्बर २०१७) के अवसर

(भाद्रपद शु.१० से आश्विन कृ.१० तक)

जन्मदिवस

३ सितम्बर (१९१४) - संघ के सह-सरकार्यवाह रहे स्व. यादव राव जोशी का जन्म दिवस

४ सितम्बर (१८२५) - भारत में बड़े उद्योगों की नींव डालने वाले दादा भाई नौरोजी का जन्म दिवस

५ सितम्बर - भारत के राष्ट्रपति रहे डा.राधाकृष्णन की जयंती (शिक्षक दिवस)

९ सितम्बर (१८८०) - राजस्थान के प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक अर्जुन लाल सेठी का जन्म दिवस

९ सितम्बर (१८५०) - साहित्य के पुरोधा भारतेन्दु हरिचन्द्र की जयंती

१५ सितम्बर (१८९२)- गदर पार्टी के क्रांतिकारी बाबा पृथ्वी सिंह आजाद का जन्म दिवस

१५ सितम्बर (१८६१)- तकनीकी विशेषज्ञ भारतरत्न डा. विश्वैश्वरैया का जन्म दिवस

बलिदान दिवस

२ व ३ सितम्बर (१९३३)- बंगाल के क्रांतिकारी अनाथ बन्धु पंजा एवं मृगेन्द्र कुमार दत्त का अंग्रेज पुलिस से संघर्ष करते हुए बलिदान

९ तथा १० सितम्बर (१९१५)- अंग्रेज पुलिस से गोलीबारी में चित्तप्रिय राय चौधरी का बलिदान (९सित.), बाघा जतीन का बलिदान (१० सित.)

१३ सित. (१९२९) - सरदार भगत सिंह के साथी यतीन्द्र नाथ दास का ६३ दिनों के अनशन के बाद जेल में बलिदान

महत्वपूर्ण घटना

४ सितम्बर (१६६९) - औरंगजेब ने काशी विश्वनाथ मंदिर का विध्वंस कर अवशेषों पर मस्जिद का निर्माण करवाया

११ सित. (१८९३) - स्वामी विवेकानन्द का शिकागो विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक उद्बोधन।

अवसर विशेष

भाद्रपद शु. १२(३ सितम्बर)- वामन जयंती

१२ सित. (१८९७)- सरगढ़ी दिवस- सिख रेजीमेंट की चौथी बटालियन के २१ जवानों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए दस हजार अफगानों को सरगढ़ी चौकी पर अधिकार करने से रोका।

१४ सितम्बर - हिन्दी दिवस

भाद्रपद शुक्ल २ (इस बार २३ अगस्त) जयंती पर विशेष

मरुधरा के पीर– बाबा रामदेव जी

पश्चिमी राजस्थान में पोकरण के पास रूणीचा नामक गाँव में विक्रमी संवत १४०९ में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को तोमर राजपूत परिवार में बाबा रामदेव ने जन्म लिया। यह समय ऐतिहासिक दृष्टि से संक्रान्ति काल था। दिल्ली में इस्लाम धर्मावलम्बी तुर्क सुल्तानों की सत्ता स्थापित हो चुकी थी। दिल्ली से इतर हिन्दू राजे-रजवाड़ों की स्वतंत्र रियासतें बन-बिगड़ रही थीं। इस प्रकार यह एक राजनैतिक अराजकता का समय था। विभिन्न मत-मतान्तरों से ग्रसित सनातन धर्म मुस्लिम कट्टरपंथियों से स्वयं को बचाने में असहाय अनुभव कर रहा था। जातिप्रथा अपने चरम पर थी तथा समाज में अस्पृश्यता का अमानवीय दृष्टिकोण हिन्दू समाज व्यवस्था को पंगु बना रहा था। सामाजिक समरसता तिरोहित हो चुकी थी तथा समाज में एक विश्रृंखलता पैदा हो चुकी थी।

समाज का आर्थिक तंत्र निजी स्वार्थ पर आधारित हो चुका था। मोटे रूप से समाज में आर्थिक आधार पर दो वर्ग कायम हो चुके थे। एक तरफ शासक-सामन्त-जागीरदार वर्ग था जो अपेक्षाकृत सम्पन्न तो था ही साथ ही वित्तीय संसाधन बटोरने व उन्हें सहेजने में लगा था। दूसरी तरफ जनसामान्य वर्ग था जो नितान्त उपेक्षित व अलग थलग पड़ा था तथा अपनी जिजीविषा के सहारे जीवन संघर्ष में टिका हुआ था। ऐसी विषम परिस्थितियों में ठाकुर अजमाल जी तोमर व माता मेणा दे की सन्तान के रूप में भगवान श्री कृष्ण ही रामदेव जी के रूप में अवतीर्ण हुए। कहते हैं द्वारिकाधीश जी की कृपा से ही अजमाल जी को दो पुत्र प्राप्त हुए थे। इसमें बड़े वीरमदेव बलराम के एवं छोटे रामदेव कृष्ण के अवतार माने जाते हैं।

जन्म से ही बालक रामदेव का अलौकिक चरित्र जनसाधारण का सहारा, सम्बल व मार्गदर्शक बना। उन दिनों पश्चिमी भारत में नाथ सम्प्रदाय का बहुत प्रभाव था। आपके गुरु भी नाथपंथ के श्री बालक नाथ जी थे, जिनसे उन्होंने अल्पायु में ही योग का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर समाधि तक के सोपानों में सिद्धि प्राप्त कर ली और निष्णात हो गये। किशोरावस्था में उन्होंने अंचल के एक दुष्ट आततायी राक्षस भैरव का वध किया तथा प्रदेश की आम जनता को नवजीवन प्रदान किया।

सिद्धयोगी होते हुए भी उन्होंने जन सामान्य के लिए साधना का सरल और सहज मार्ग ''भक्ति'' मार्ग अपनाया। भक्ति के प्रचार-प्रसार के बहाने उन्होंने अस्पृश्य मानी जाने वाली जातियों के लोगों को अपने सान्निध्य में लेकर उन्हें समानता प्रदान की तथा उन्हें ऋषि (रिख) का दर्जा दिया। जैसे डालीबाई मेघवाल जाति की थी परन्तु आपकी प्रिय शिष्या थी। इसी प्रकार थारूमेघ को समर्थ गुरु का दर्जा प्रदान कर सामाजिक समरसता का एक आदर्श उदाहरण कायम किया। रामदेव जी के इस प्रकार के आचरण ने उच्च समझे जाने वाले वर्ग अर्थात् शासक, सत्ता व अधिष्ठाता वर्ग ने उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया। इतना ही नहीं इनके स्वयं के बहनोई पूगलपति राव विजयसिंह ने तो उनसे रिश्ता तक निभाना छोड़ दिया।

रामदेव जी ने अपने विवाह उत्सव में शामिल होने हेतु अपनी बहिन सुगणा को लाने हेतु अपने विश्वस्त रतन राइका को 'पूगल' भेजा तो राव ने उसे अपमानित कर कैद में डाल दिया। फलतः वे स्वयं पूगल गये। पूगल में उन्होंने अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति के लोगों तथा जनसामान्य के साथ रात्रि सत्संग कर राव के आहत अहंकार को खूब उद्वेलित किया। बहनोई की सैन्य शक्ति को पराभूत कर सामाजिक समरसता का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने समर्थ होते हुए भी अपने विवाह हेतु अमरकोट के शासक दलजी की पंगु पुत्री नेतल दे से शादी की स्वीकृति देकर नारी वर्ग के प्रति उदारता का परिचय दिया तथा समाज के सामने एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया।

पीरों के पीर- साम्प्रदायिक सद्भाव हेतु तथा इस्लाम के सत्ता प्रयोजित धर्म प्रसार को रोककर स्वयं 'पीरों के पीर' से जगत में प्रसिद्ध हो गये। आज भी रामदेवरा में हिन्दू-मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों की समान आस्था है। इस प्रकार इस्लामीकरण का प्रयास स्वतः ही निर्मूल हो गया।

इस प्रकार अनेकों कालजयी कार्य करके १०६ वर्ष की अवस्था में वि.स.१५१५ में रामदेवरा में आपने समाधि ले ली। समाधि लेने के बाद आज भी आपकी अदृश्य सत्ता द्वारा अनवरत आज जनहित के कार्य किये जा रहे हैं।

बाबा रामदेवजी आज मारवाड़ ही नहीं, अधिसंख्य भारतवासियों की आस्था के केन्द्र हैं तथा साम्प्रदायिक सद्भाव, जातिगत समानता, मानवीयता व विश्व-बन्धुत्व का अमर संदेश दे रहे हैं। ❑

***- किशन सिंह,** राईसर, जोधपुर*

जन्म दिवस (३ सितम्बर) पर विशेष

दक्षिण में संघ कार्य का सूत्रपात करने वाले यादवराव जोशी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नीव बनने वाले तपस्वी कार्यकर्ताओं में एक नाम स्व. यादवराव जोशी का भी आता है। दक्षिण में हिन्दू संगठन की अलख जगाने वाले यादवराव जी का जन्म अनन्त चतुर्दशी (३ सितम्बर १९१४) को नागपुर के एक वेदपाठी परिवार में हुआ। पिता श्रीकृष्ण गोविन्द जोशी पौरोहित्य का कार्य करते थे।

यादवराव जब ६ माह के थे तो उनकी माँ परलोक सिधार गयी। पिता की निगरानी में यादवराव का लालन-पालन हुआ। यादवराव ने कुछ समय तक वेदाध्ययन करते हुए पिता के साथ पौरोहित्य का कार्य किया, किन्तु पौरोहित्य में मन नहीं लगता देखकर पिता ने उनका विद्यालय में दाखिला करवा दिया। यथा समय विद्यालय की शिक्षा पूरी की।

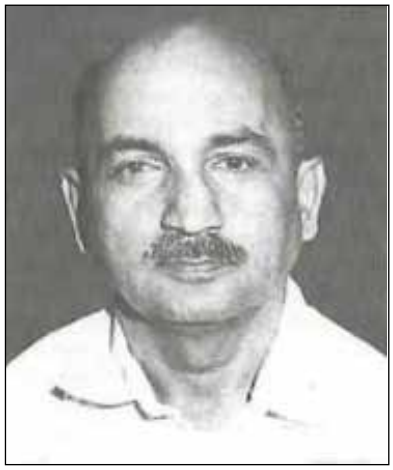

विद्यालय जीवन से ही यादव राव ने संगीत गुरु श्री शंकर राव से गायन सीखना प्रारम्भ कर दिया। १९२७ में संगीत सीखने वाले कलाकारों का एक भव्य कार्यक्रम नागपुर के वेंकटेश सभागृह में रखा गया था। संगीत की नामचीन हस्तियाँ इस कार्यक्रम में मौजूद थी। इसी कार्यक्रम में संघ संस्थापक डा.हेडगेवार जी भी उपस्थित थे। बारह साल के यादव राव ने अपनी मधुर आवाज से उस कार्यक्रम में सबका मन मोह लिया। इसी कार्यक्रम में उन्हें 'संगीत बाल भास्कर' का सम्मान दिया गया। कार्यक्रम के बाद डाक्टर जी यादवराव से मिले और उनकी पीठ थपथपाई। इस भेंट से उनका आगे का पूरा जीवन ही परिवर्तित हो गया।

डाक्टर जी की इच्छा

इसी कार्यक्रम के उपरान्त यादव राव जी संघ शाखा में जाने लगे। संगीत साधना करके व्यक्तिगत जीवन में कीर्ति प्राप्त करने के बजाय अपना जीवन संघ कार्य में समर्पित करने के विचार मन को आकर्षित करने लगे थे।

अब यादवराव डाक्टर हेडगेवार जी के साथ रहने लगे। एक बार डाक्टर साहब बड़े उदास मन से मोहिते के बाड़े की शाखा पर आये। उन्होंने सबको एकत्र कर कहा कि ब्रिटिश शासन ने वीर सावरकर की नजरबंदी दो वर्ष के लिए और बढ़ा दी है। अतः सब लोग तुरंत प्रार्थना कर शांत रहते हुए घर जायेंगे। इस घटना ने यादवराव के मन पर अमिट छाप छोड़ी और वे पूरी तरह से डाक्टर जी के हो गये।

शाखा का कार्य करते हुए यादवराव ने एम.ए. एल.एल.बी. तक की शिक्षा पूरी की। शिक्षा पूर्ण करते ही उन्होंने संघ कार्य में अपना जीवन लगाने का निश्चय किया।

दक्षिण भारत में संघ

शुरु में यादवराव को झाँसी भेजा गया। दो वर्ष कार्य करने के बाद १९४१ में उन्हें कर्नाटक प्रांत प्रचारक बना कर भेजा गया। इसके बाद वे दक्षिण क्षेत्र प्रचारक, अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख, सेवा प्रमुख तथा १९७७ से १९८४ तक संघ के सह सरकार्यवाह भी रहे।

कर्नाटक में संघ के सुदृढ़ आधार को खड़ा करने में उनकी भूमिका वैसी ही थी जैसी भाऊराव जी की उत्तर प्रदेश में रही थी। कर्नाटक के बाद धीरे-धीरे उन्होंने सम्पूर्ण दक्षिण का कार्य अपने मजबूत कंधों पर ले लिया। अपने सहज, सरल और मिलनसार स्वभाव के कारण उन्होंने अनेक लोगों को संघ कार्य में पूरा समय लगाने के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि- *'संघ कार्य का विस्तार करना है तो हमें समाज के दलित वर्ग में भी पहुँचना होगा।'*

अद्भुत कार्यपद्धति

संघ कार्य को और अधिक विस्तार देने के लिए 'हिन्दू सेवा प्रतिष्ठान', 'संस्कृत प्रचार समिति','राष्ट्रोत्थान प्रकाशन','बाल गोकुलम'जैसे असंख्य उपक्रमों की कल्पना भी उनकी प्रेरणा से ही निकली । इसके साथ ही प्रांतीय स्तर पर स्वयंसेवकों का शिविर लगाने की योजना भी उन्होंने ही शुरु की। मितव्ययता का एक आदर्श उन्होंने कार्यकर्ता प्रचारकों के सामने खड़ा करके दिखाया।

विदेश में संघ कार्य

यादवराव जी ने संघ कार्य के विस्तार के लिए दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, केन्या, नैरोबी, युगाण्डा जैसे अनेकों स्थानों की यात्राएं की। यादवराव जी का कहना था कि **'संसार में कहीं भी जाओ अपनी मातृभूमि -स्वदेश का स्मरण रखो।'**

उनका यह भी मत था कि भारतवासी जहाँ भी रहे, वहाँ की उन्नति में उन्हें योगदान देना चाहिए। क्योंकि हिन्दू पूरे विश्व को एक परिवार मानता है।

अविचल निष्ठा

सामान्य कद वाले यादवराव जी का जीवन वास्तव में प्रेरणादायी एवं सादगीपूर्ण था। पूज्य डाक्टर जी जैसी विलक्षण संगठन कुशलता, वैसा ही प्रचण्ड आत्मविश्वास, अविश्रांत परिश्रम करने की क्षमता उनमें थी।

अखण्ड राष्ट्र आराधना करते हुये जीवन की संध्या काल में वे अस्थि कैंसर से पीड़ित हो गये थे। २० अगस्त १९९२ को बैंगलूर संघ कार्यालय में ही उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की। ❑

विदेशी वस्तुएं त्यागकर बोलो वंदेमातरम्

स्वदेशी जागरण मंच ने देश भर में चीनी सामान के विरोध में एक राष्ट्रीय अभियान चला रखा है। इस अभियान के अंतर्गत आम जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए स्वदेशी उत्पादों के पत्रक भी स्थान-स्थान पर वितरित किये जा रहे हैं। देश के नागरिकों से चीनी सामान का बहिष्कार करने एवं स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने का अनुरोध भी मंच की ओर से किया जा रहा है। आइए हम सभी संकल्प करें –

हम सब स्वदेशी अपनायेंगे – अपने देश को सक्षम बनायेंगे **करो स्वदेशी से प्यार–बनो राष्ट्र की उन्नति में भागीदार**

स्वदेशी अपनाओ – देश बचाओ

उत्पाद	स्वदेशी उत्पादों का प्रयोग करें	विदेशी उत्पादों का बहिष्कार करें
टूथपेस्ट, दंत मंजन तथा टूथब्रश	बबूल, प्रॉमिस, विको, ओरा, अमर, एंकर, डाबर, बंदर छाप, टू जेल, चॉईस, मिसवाक, अजय, हर्बोडेंट, अजंता, गरवारे ब्रश, क्लासिक, ईगल, दंतपोला, बैद्यनाथ, युवराज, इमामी तथा पतंजलि उत्पाद	कॉलगेट, सिबाका, क्लोज अप, पेप्सोडेंट, सिग्नल, मॅक्लीन्स, प्रूडेंट, एमवे, एक्वाफ्रेश, नीम, ओरल-बी, फोरहंस
बिस्किट, चॉकलेट, दुग्ध उत्पादन एवं ब्रेड	साठे, बेकमेन, मोनॅको, क्रेकजैक, गिट्स, शालीमार, पैरी, रावलगांव, नीलगिरी, क्लासिक, अमूल, न्यूट्रामूल, मान्जीनीज, आरे, कॅमको, सम्राट, रॉयल,विजया, इंडाना, सफल, एशियन, विव्स-ब्रेड, वेरका, सागर, सपन, प्रिया गोल्ड, न्यूट्रीन, शांग्रिला, चैम्पियन, एम्प्रो, पार्ले तथा पतंजलि उत्पाद	ब्रिटानिया-गुड डे, टाईगर, मैरी, नेसले, कैडबरी, बोर्नव्हिटा, हॉलिक्स, बूस्ट, मिल्कमेड, किसान, मैगी, फैरेक्स, अनिकस्प्रे, कॉम्प्लान, किटकैट, चार्ज, एक्लेअर, मीलो, मॉडर्न ब्रेड, माल्टोवा, विवा, माइलो, मिल्कफूड
नहाने का साबुन	गोदरेज, संतूर, निरमा, स्वस्तिक, मैसूर सेंडल, विप्रो, शिकाकाई, फ्रेश, अफगान, कुटी, होमाकोल, प्रीमियम, मीरा, मेडिमिक्स, विमल, चंन्द्रिका, गंगा, सिंथाल, वनश्री, सर्वोदय नीमा, अनुरा, लघु-कुटीर उद्योग के अन्य स्थानीय उत्पाद तथा पतंजलि उत्पाद	लक्स, लिरील, लाईफबॉय, पियर्स, रेक्सोना, हमाम, जय मोती, कैमे, डॅव, पोड्स, पामोलिव, जॉन्सन, क्लिएरसिल, डेटॉल, लेसान्सी, जैस्मीन, गोस्डमिस्ट, लक्मे, एमवे, क्वांटम, मार्गो, फा, नीम
सौंदर्य प्रसाधन	टिप्स एण्ड टोज, सिंथॉल, संतूर, इमामी, अफगान, बोरोप्लस, तुलसी, वीको टर्मरिक, आर्निका, हेयर एण्ड केयर, हिमानी, पॅराशूट, डॅन्ड्रफ, सोल्यूशन, हिमताज, सिल्केशा, नाईल, फेम, बलसारा, जेके, डाबर, झंडू, सांडू, बैद्यनाथ, हिमालय, भास्कर, तन्वी, बोरोलीन, केराफेड, बजाज सेवाश्रम, प्रकाश, कोकोराज, प्रीमियम, मूव, क्रैक क्रीम, अयूर, पार्क एवेन्यू, कासवछाप लघु-कुटीर उघोग के अन्य स्थानीय उत्पाद तथा पतंजलि उत्पाद	जॉन्सन, पॉण्ड्स, ओल्ड स्पाईस, क्लिसरसिल, ब्रिलक्रीम, फेयर एण्ड लवली, वेल्वेट, मेडीकेयर, लेवेंडर, नायसिल, शॉवर टू शॉवर, क्यूटीकुरा, लिरिल, लैक्मे, डेनिम, ऑरगौनिक्स, पेन्टीन, रूट्स, हेड एण्ड शोल्डर, एमवे, क्वांटम, क्लीनिक, निहार, कोको केयर, ग्लैक्सो, नवराट्रिस, मॉरटिम आदि
विद्युत उपकरण	विडियोकॉन, बी.पी.एल, ओनिडा,सलोरा, एलएण्ड टी, टी-सीरीज, नेस्को, वेस्टर्न, अपट्रॉन, केल्ट्रान, कॉस्मिक, टीवीएस, गोदरेज, क्राउन, बजाज, ऊषा, पोलर, एँकर, सूर्या, ओरिएन्ट, सिन्नी, टूल्लू, क्रॉम्पटन, रवि, जयशंकर, कैलाश, श्रीराम, लायड्स, ब्लू स्टार, वोल्टाज, कूल होम, खेतान, एवरेडी, जीप, नोविनो	जीईसी, फिलिप्स, सोनी, टीडीके, निप्पो, नेशनल-पैनासोनिक, शार्प, जीई, व्हर्लपूल, सैमसंग, देवू, तोशीबा, एल जी, हिताची, थॉमसन, इलेक्ट्रोलक्स, अकाई, सानसूई, केनवुड, आइवा, ऑल्विन फ्रिज, कैरियर, कोंका, टपरवेयर, जापान लाईफ, ओमेगा, टाइमेक्स, राडो, पायोनियर, जापान लाईफ

अवधि मत गिनो तन्मयता से कारावास का समय निकालो

आपातकाल के दौरान जिस प्रकार से तानाशाही सरकार ने आम जनता पर शिकंजा कसा उसके विरूद्ध पूरा देश एक साथ उठ खड़ा हुआ। देशप्रेमियों ने तानाशाही राज को उखाड़ फेंकने के लिए कमर कसी। स्वतंत्र भारत के इतिहास का यह सबसे विवादास्पद और अलोकतान्त्रिक कालखण्ड था। उस कालखण्ड की त्रासदी से हमारी नौजवान पीढ़ी अब तक अनभिज्ञ थी। उसी से परिचय कराने का एक प्रयास पाथेय कण ने गत अंकों से प्रारम्भ किया। आपातकाल की इस विभीषिका से परिचय कराती संस्मरणों की अंतिम किश्त –

आपातकाल के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर भी तानाशाही सरकार द्वारा ४ जुलाई १९७५ को प्रतिबंध लगा दिया गया। उस समय के बीकानेर नगर प्रचारक श्री रमेश जी ईसराणी लगातार कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करते रहे। कुछ दिनों बाद यह निर्णय किया गया कि १५ जुलाई तक प्रत्येक राजनीतिक संगठन का एक कार्यकर्ता सत्याग्रह करे। इसी क्रम में जनसंघ के कार्यकर्ता रिखबदास जी बोड़ा ने घूमचक्कर, घासमण्डी (जिसे आज बड़ा बाजार के नाम से जाना जाता है) के पास सत्याग्रह करने की घोषणा की। उन्हें सबसे पहले माला नर्बदाशंकर आचार्य ने पहनाई। श्री बोड़ा सत्याग्रह करने के बाद भी पुलिस की पकड़ में नहीं आ सके। फिर चार दिन बाद में रत्ताणी व्यासों के चौक से पुनः सत्याग्रह प्रारम्भ किया लेकिन पुलिस उन्हें फिर भी गिरफ्तार नहीं कर सकी। बाद में पुलिस ने उनके घरवालों को प्रताड़ित किया।

आपातकाल के समय में संघ के प्रमुख कार्यकर्ता लगातार पूरे राजस्थान में घूमते रहे। उस समय प्रांत कार्यवाह दादाभाई बीकानेर में चार बार आये और लगातार कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें करते रहे। इसी बीच प्रांत प्रचारक ब्रह्मदेव जी भी बीकानेर आये और कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। आखिरकार संघ ने १४ नवम्बर १९७५ को पूरे देश में सत्याग्रह करने की घोषणा कर दी। उसी दौरान अखिल भारतीय अधिकारी श्री बापूराव जी मोघे डॉक्टर के वेश में बीकानेर आये। वहाँ उन्होंने १५० कार्यकर्ताओं की बैठक ली और बीकानेर में सत्याग्रह का कार्य रमेश ईसराणी तथा एडवोकेट ओम प्रकाश आचार्य को सौंपा। ओमजी आचार्य ने भूमिगत रहते हुए सत्याग्रह करने वाले कार्यकर्ताओं की टुकड़ियां तैयार की। उसी दौरान मुझे मेरे कार्यालय विद्युत मंडल से और श्री दाऊदयाल आचार्य को उनके वकालत कार्यालय, बड़ा बाजार से गिरफ्तार किया गया।

हम दोनों को लेकर पुलिस सदर थाना पहुंची और वहां हमारी तलाशी लेकर हमें जेल भेज दिया गया। जेल के अन्दर पहले से बंद कुछ कार्यकर्ताओं के चेहरों पर रौनक आ गई और वो बहुत ही प्रसन्न हुए। एक कार्यकर्ता श्योपत सिंह ने निराश होकर कहा कि हमारी होली, दीपावली और सभी त्यौहार अब जेल में ही सम्पन्न होंगे। उस समय दाऊजी ने उन्हें हिम्मत देते हुए कहा कि–*''अवधि मत गिनो, राम वनवास के समय भरत ने अवधि की गणना की और वो कृषकाय हो गये, परन्तु भगवान राम ने चौदह वर्ष का वनवास बड़ी तन्मयता से पूर्ण किया और रावण का वध कर पुनः अयोध्या आये।''* तब मैंने कहा आप सभी आज बीबीसी सुनना तो पता चलेगा कि अब पूरे देश

छोटी सी कोठरी में बाईस लोग ठूंस दिये

आपातकाल के दौरान जहां एक ओर देवकांत बरुआ जैसे नेता 'इंडिया इज इंदिरा एण्ड इंदिरा इज इंडिया' कह कर मां भारती का अपमान कर रहे थे, तो दूसरी ओर संत विनोबा भावे आपातकाल को 'अनुशासन पर्व' की संज्ञा देकर सम्मानित कर रहे थे। लाखों देशभक्त इस दौरान जेल गये। शिवपुरी (म.प्रदेश) इसमें कहाँ पीछे रहने वाला था।

शिवपुरी महाविद्यालय का पूर्व अध्यक्ष व विद्यार्थी परिषद् का प्रांतीय महामंत्री होने के कारण मेरा भी वारंट निकला। मेरे पिताजी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष थे, अतः पूर्व सूचना मिल जाने के कारण मैं भूमिगत हो गया। एक माह तक मैं पुलिस के हाथ नहीं आया। प्रशासन ने घरवालों पर दबाव बनाया कि यदि मैं हाजिर नहीं हुआ तो श्री रामचरण लाल डंडोतिया (मेरे पिताजी) को मीसा में बंद कर दिया जाएगा, नौकरी जायेगी सो अलग। विवश होकर मैंने गिरफ्तारी देना तय किया, साथ ही यह भी तय किया कि सीधे ढंग से गिरफ्तारी नहीं देंगे, गिरफ्तार होंगे तो शान से, सम्मान से। सत्याग्रह करके गिरफ्तारी देंगे।

मेरे साथ मेरे मित्र श्री दिनेश गौतम का भी वारंट था। जब उसके परिवार को पता चला कि मैं गिरफ्तारी दे रहा हूँ, तो उन्होंने आग्रह किया कि दिनेश को भी मैं अपने साथ ही रखूं। दूसरे दिन हम दोनों शिवपुरी के प्राचीन नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर के बगीचे से सत्याग्रह के लिए सर पर काला कपड़ा बांधकर निकले।

महादेव गली से सदर बाजार, माधव चौक, कमला गंज आदि में घूमते हुए हम नारे लगा रहे थे– 'इंदिरा तेरी तानाशाही नहीं चलेगी।', 'जो हिटलर की चाल चलेगा वो कुत्ते की मौत मरेगा' 'नरक से नेहरु करे पुकार मत कर बेटी अत्याचार'। हमारे पीछे सैकड़ों की संख्या में लोग चल रहे थे। उस समय हमें यह पता नहीं था कि गिरफ्तारी के बाद कब छूटेंगे? छूटेंगे भी या नहीं। हम लोग पूरे शहर में घूमते रहे किन्तु कोई गिरफ्तार करने नहीं आया। बहुत देर बाद गिरफ्तार करने पुलिस अधिकारी पहुँचे।

गिरफ्तारी के बाद हम लोगों को शिवपुरी जेल में रखा गया। तीन लोगों के लिए पर्याप्त कमरे में २२ बंदी ठूंसे गए। रात को सोते समय यदि किसी को करवट लेना हो तो बगल वाले को कहना पड़ता था कि भैया जरा तू भी करवट ले ले।

जेल की रसोई में बने भोजन में सबके हिस्से में चार रोटी और दाल आती थी। एक मीसाबंदी की खुराक कुछ अधिक जानकर श्री मुन्नालाल गुप्ता, अशोक पांडे तथा मैंने अपने हिस्से की एक →

में सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया है।

इसके बाद बीकानेर में दो दिन बाद एक और टोली सत्याग्रह करते हुए जेल में आई। उस टोली की पुलिस द्वारा पिटाई भी की गई थी इसलिए हमने उस टोली का डॉक्टरी मुआयना करवाने के बाद ही उन्हें जेल में लाने दिया। इसी दौरान हमने जेल में महाशिवरात्रि को महारुद्राभिषेक का भी आयोजन किया। इसमें सभी कार्यकर्ताओं और साम्यवादी नेता रमेश पोटलिया ने भी भाग लिया। मकर संक्रान्ति का महोत्सव जेल में मनाया गया। इसके साथ ही जेल में प्रतिदिन शाखा भी लगने लगी।

जेल में हमसे मिलने एडवोकेट नमामी शंकर जी आचार्य भी आये। उन्होंने कहा कि आपको मजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं किया गया तो एक मुकदमा दर्ज करवाते है। दाउजी के कहने पर नमामी शंकर जी ने मेरे साथ बद्रीदास प्रजापत और मथुरादास व्यास के नाम से मुकदमा दर्ज करवाया। परिणाम स्वरूप हमें मार्च १९७६ में होली के दो दिन पूर्व रिहा किया परन्तु तीन दिन बाद ही पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। समय के प्रभाव के साथ-साथ इस अंधकारमय राजनीतिक जीवन का अंत हुआ और २१ मार्च १९७७ का सूरज एक नया सवेरा लेकर आया। लोकसभा चुनाव में तत्कालीन प्रधानमंत्री की तानाशाही राजनीति का अंत हुआ और भारत में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार का चयन हुआ, जिसके प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई नियुक्त हुए। ❑

-गेवर चन्द जोशी, बीकानेर

→ रोटी उनको देना तय किया। कुछ समय पश्चात् जब उक्त मीसाबंदी से पूछा कि भैया अब तो पेट भर जाता होगा न? तो उन्होंने रुआंसे स्वर में जवाब दिया, ''भाई साहब इनसे क्या होता है, मैं तो इतनी ही और खा सकता हूँ।''

जेल में समय बिताने के लिए नियमित दिनचर्या बनाई गई। सुबह नित्यकर्म उपरांत व्यायाम, स्वाध्याय, गीता पाठ फिर भोजन बनाने की सामूहिक तैयारी, दोपहर में कुछ बौद्धिक कार्यक्रम, चर्चा, प्रतियोगिता आदि।

हमारे जेल जीवन की दिनचर्या को देखकर एक राजनैतिक कार्यकर्ता ने तो अपनी निजी दैनन्दिनी में लिखा- *'लगता है आर एस एस वालों ने इंदिरा जी से मिलकर यह योजना बनाई है, कि जो लोग ओटीसी (संघ शिक्षा वर्ग) नहीं कर पाते, उन्हें जबरन गोपाल डंडौतिया जैसे लोग प्रशिक्षित कर दें।'*

समय धीरे-धीरे कटता गया और इसी दौरान १९७७ में चुनावों की घोषणा हो गई। लोग धीरे-धीरे जेल से छूटने लगे। जेल से जब लोग रिहा होते तो उनको विदा करते समय शेष बंदी नारे लगाते ''जनता की सरकार बनाने, आप चलो हम आते हैं''। ''संजय-इंदिरा को जेल भिजाने, आप चलो हम आते हैं।'' ''इंदिरा गांधी भूल न जाना, भारत है यह रूस नहीं ।'' ''धोखा है बेईमानी है यह कैसी अजब कहानी है।'' अंततः जनता सरकार बनने के बाद शिवपुरी के जो पांच लोग सबसे अंत में रिहा हुए, उनमें मैं भी एक था। ❑

-गोपाल डंडौतिया, शिवपुरी(म.प्रदेश)

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

१. जाम्बवंत, अंगद, हनुमान आदि वानरों का दल माता सीता की खोज में किस दिशा में गया?
२. दोनों हाथों से वाण चलाने में समान कुशलता के कारण महारथी अर्जुन को किस नाम से जाना गया?
३. इंदोनेशिया के किस द्वीप में एक पहाड़ी पर पाँचों पाण्डवों के सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं?
४. गुरु गोविन्द सिंह जी के छोटे साहबजादों को किस स्थान पर जीवित दीवार में चिनवा दिया गया?
५. संस्कृत की प्रसिद्ध पुस्तक 'शिशुपाल-वध' के लेखक कौन हैं?
६. अफगानिस्तान (गांधार) के अंतिम हिन्दू शासक कौन थे?
७. प्राचीन भारत के गणितज्ञ माधवन ने पाई (π) का मान दशमलव के बाद कितने स्थानों तक ठीक-ठीक निकाल दिया था?
८. सन् १९१५ में अफगानिस्तान में जो प्रथम 'आजाद हिन्द सरकार' बनी उसके राष्ट्रपति कौन थे?
९. कविता की पंक्ति 'सिर काट दे दियो क्षत्राणी' किस तेजस्वी वीरांगना से सम्बन्धित हैं?
१०. हाल ही में भारत का कौन सा नगर यूनेस्को की विश्व धरोहरों में शामिल किया गया है?

(उत्तर इसी अंक में है)

पंचांग- भाद्रपद (शुक्ल पक्ष)

युगाब्द-५११९, विक्रमी-२०७४, शाके-१९३९

(२२ अगस्त से ६ सितम्बर २०१७ तक)

हरितालिका तीज- २४ अगस्त , **महागणपति चतुर्थी** - २५ अगस्त, **ऋषि पंचमी** - २६ अगस्त, **सूर्य षष्ठी** - २७ अगस्त, **मुक्ताभरण सप्तमी, मेला देवनारायण जी का-** २८ अगस्त, **राधाष्टमी** - २९ अगस्त, **तेजा दशमी** - ३१ अगस्त, **जलझूलनी एकादशी** - २ सितम्बर, **प्रदोष** - ३ सितम्बर , **पंचक** - ४ सितम्बर (रात ११.५६ बजे) से ९ सितम्बर (प्रातः ११.४३ बजे) तक, **अनन्त चतुर्दशी एवं पूर्णिमा व्रत** - ५ सितम्बर, **पितृपक्ष प्रारम्भ** - ६ सितम्बर (पूर्णिमा का श्राद्ध-५ सितम्बर एवं प्रतिपदा का श्राद्ध ६ सितम्बर को रहेगा)

चन्द्रमा - २२-२३ अगस्त **सिंह** राशि में, २४-२५ अगस्त **कन्या,** २६ से २८ तक **तुला** में, २९-३० नीच की राशि **वृश्चिक** में, ३१ अगस्त व १,२ सितम्बर को **धनु,** ३-४ सित. **मकर** तथा ५-६ सितम्बर को **कुंभ** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

भाद्रपद शुक्ल पक्ष में **गुरू** तथा **सूर्य** क्रमशः कन्या व सिंह राशि में स्थित रहेंगे। १८ अगस्त को प्रातः ५.५३ बजे राशि परिवर्तन कर चुके **राहु** तथा **केतु** कर्क व मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार २१ अगस्त को प्रातः १०.५२ बजे मिथुन से कर्क में प्रवेश कर चुके **शुक्र** कर्क में ही रहेंगे। **मंगल** २७ अगस्त को प्रातः ८.५० बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। **वक्री शनि** वृश्चिक राशि में रहते हुए २५ अगस्त को सायं ५.४० बजे तथा वक्री **बुध** सिंह राशि में रहते हुए ५ सितम्बर को सायं ५.०० बजे मार्गी होंगे।

*** कश्मीरी हिन्दुओं का सब कुछ छिन गया फिर भी वे आतंकवादी नहीं बने।**

कश्मीरी मुस्लिमों को सब कुछ दिया फिर भी वे आतंकवादी बन गये। यही अंतर है विचारधारा का।

*** पत्थर भी दो प्रकार का होता है,**

नेताजी की गाड़ी पर गिरे तो लोकतंत्र पर हमला।
जवानों पर गिरे तो अभिव्यक्ति की आजादी।।

* गुजरात में एक मुस्लिम को जिताने के लिये चवालीस हिन्दुओं को कर्नाटक में बंधक बनाया गया। फिर भी वे कहते हैं कि भारत में अल्पसंख्यक असुरक्षित हैं।

पंजाब के इन क्रांतिकारियों को आजीवन काले पानी की सजा मिली। सन् १९३८ में अंदमान जाने से पहले बम्बई स्टेशन पर लिया गया उनका चित्र।

भीड़ द्वारा मारा जाना क्या है ?

१९४७

पाकिस्तान में लाखों हिन्दू मार दिये गये। यह नरसंहार नहीं है।

१९८४

हजारों सिख दिल्ली व अन्यत्र मार दिये गये। यह नरसंहार नहीं है।

२००२

गुजरात में जिहादियों ने ट्रेन में ५९ हिन्दुओं को जिन्दा जला दिया। यह नसंहार नहीं है।

किन्तु ट्रेन में बैठे लोगों के आपसी झगड़े में एक व्यक्ति मारा गया तो यह नरसंहार है जिसके लिए पूरे देश में तूफान मचा दिया गया ।

रोगोपचार के राम बाण घरेलू नुस्खे

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति रोग का नहीं बल्कि स्वास्थ्य का विज्ञान है। प्राचीन काल में उपचार के लिये इसी पद्धति का सहारा लिया जाता था। सफल उपचार होने के कारण वर्तमान पीढ़ी फिर से इसी पद्धति का सहारा ले रही है। कुछ सामान्य रोगों के उपचार दोहों के रूप में दिये जा रहे हैं, जो हमारे दैनिक जीवन में काफी सहायक सिद्ध होंगे।

रस अनार दाने का, दो बूँद नाक में डाल।
खून बहे जो नाक से, बंद होय तत्काल।।

अनार के दानों के रस की दो बूँद नाक में डालने से नकसीर तुरंत रुक जाती है।

भून मुनक्का शुद्ध घी, सेंधा नमक मिलाय।
चक्कर आना बंद हों, जो भी इसको खाय।।

घी में मुनक्का को भूनकर उसमें सेंधा नमक लगाकर खाने से चक्कर आना बन्द होता है।

दो चम्मच रस प्याज का, मिश्री संग पी जाय।
पथरी केवल बीस दिन में, गल के बाहर आय।।

दो चम्मच प्याज के रस में स्वाद अनुसार मिश्री मिलाकर बीस दिन तक लेने से पथरी गलकर बाहर आ जाती है।

आधा कप अंगूर रस, केसर जरा मिलाय।
पथरी में आराम हो, रोगी प्रतिदिन खाय।।

आधा कप अंगूर के रस में मामूली सा केसर मिलाकर रोजाना सेवन करने से पथरी में आराम मिलता है।

दाड़िम छिलका सुखाय कर, पीसे चूर बनाय।
सुबह-शाम जल डालकर, पी मुँह बदबू जाय।।

अनार का छिलका सुखाकर उसका पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन सुबह-शाम पानी से इस चूर्ण की एक चम्मच लेने से मुँह की बदबू की समस्या से निजात मिलती है।

अदरक रस मधु भाग सम, करें अगर उपयोग।
दूर आपसे होएगा, कफ और खाँसी रोग।।

समान मात्रा में अदरक का रस और शहद मिलाकर लेने से खांसी और जुकाम में आराम मिलता है।

ताजे तुलसी पत्र का, पीजे रस दस ग्राम।
पेट दर्द से पायँगे, कुछ पल में आराम।।

पेट में दर्द हो रहा हो तो ताजे तुलसी के पत्तों का एक चम्मच रस निकालकर पीने से राहत मिलती है।

रुई जलाकर भस्म कर, वहाँ करें भुरकाव।
जल्दी ही आराम हो, होय जहाँ पर घाव।।

शरीर में यदि घाव हो गया हो तो रुई को जलाकर उसकी राख को उस पर लगाने से जल्दी ही फायदा होता है।

मिश्री, कत्था तनिक सा, चूसें मुँह में डाल।
मूँह में छाले हों अगर, दूर होंय तत्काल।।

मिश्री और कत्थे का छोटा सा टुकड़ा लेकर चूसने से मुँह के छालों में आराम मिलता है।

ममता से बड़ा कर्तव्य

एक बहुत बड़े वकील थे। उनके पास एक कत्ल का मुकदमा था जिसको सुलझाने में उन्होंने रात-दिन एक कर रखा था। उन्हीं दिनों गांव में उनकी पत्नी बहुत बीमार हो गई। बीमारी गंभीर थी। वकील साहब पत्नी की सेवा में लग गये। उसी दौरान मुकदमे की सुनवाई की तारीख आ गई। वकील साहब के लिए बड़ी असमंजस की स्थिति थी। इधर पत्नी मृत्युशैया पर थी, उधर पेशी पर शहर जाना जरूरी था।

मुकदमे की पेशी पर न जाने से केस के खारिज हो जाने और आरोपी को फाँसी होने का अंदेशा था। वकील साहब की पत्नी बहुत समझदार और धीरजवान स्त्री थी। वह अपने पति से बोली-'' आप मेरे स्वास्थ्य की चिंता न करें। पेशी पर शहर अवश्य जायें। भगवान सब अच्छा करेंगे।''

दुखी मन से वकील साहब शहर चले आये और अपने मुवक्किल की पैरवी के लिए समय पर अदालत में पहुँच गये।

मुकदमा न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत किया गया। सरकारी वकील ने अपनी दलीलें देकर यह साबित करने की कोशिश की कि आरोपी कसूरवार है और उसके लिए फाँसी से कम सजा हो ही नहीं सकती।

वकील साहब बचाव-पक्ष की ओर से जवाब देने खड़े हुए। वह बहस कर ही रहे थे कि उनके सहयोगी ने एक तार उनके हाथ में थमा दिया। वकील साहब थोड़ी देर रूके। उन्होंने तार पढ़ा। पढ़कर अपने कोट की जेब रख लिया और फिर बहस में लग गये। अपनी बहस में उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि उनके मुवक्किल ने यह खून नहीं किया है। बहस के बाद मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला सुनाया, '' आरोपी निरपराध है और उसे छोड़ दिया जाय।''

अदालत की कार्रवाई के बाद बधाई देने दूसरे साथी वकील साहब के कमरे में आये। वकील साहब ने अपने साथियों को वह तार दिखाया, जो उन्हें अदालत में बहस के दौरान मिला था। मित्रों का तो तार पढ़ते ही खून सूख गया। तार में लिखा था-

'' आपकी पत्नी का देहान्त हो गया।''

यह वकील थे सरदार वल्लभ भाई पटेल-भारत की एकता के निर्माता।

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं।

संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान में वृद्धि करें।

- १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धाओं में से एक थे।
- अंग्रेज जिनकी युद्ध कला से घबराते थे।
- जो कभी अंग्रेज सरकार के हाथ नहीं आये।
- उनका जन्म महाराष्ट्र में हुआ था।
- इनके स्थान पर इनका एक मित्र फाँसी पर चढ़ गया।

(उत्तर इसी अंक में है)

बाल-प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रो! इस अंक में रामायण से संबंधित दस प्रश्न पूछे जा रहे हैं। प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये है जिनमें से एक उत्तर सही है। इस उत्तर को ढूंढ़ो और अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा लो।

१. शत्रुघ्न की माँ का नाम क्या था?
(अ) कौशल्या (ब) कैकेई (स) सुमित्रा (द) मंथरा

२. धनुष यज्ञ में भाग लेने के लिए श्रीराम-लक्ष्मण किसके साथ जनकपुरी गये?
(अ) विश्वामित्र (ब) वशिष्ठ (स) वाल्मीकि (द)जाबाल

३. कैकेई ने राजा दशरथ से कितने वर माँगे?
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार

४. कार्तिकेय के पिता का क्या नाम था?
(अ) ब्रह्मा (ब) विष्णु (स) इन्द्र (द) शंकर

५. भरत की पत्नी का नाम क्या था?
(अ) उर्मिला (ब) सीता (स) माण्डवी (द) श्रुतिकीर्ति

६. भगवान राम ने वनवास में किसके झूठे फल खाए?
(अ) अहिल्या (ब) शबरी (स) शूर्पनखा (द) मंदोदरी

७. रावण के कितने मस्तक थे?
(अ) चार (ब) दो (स) पाँच (द) दस

८. रावण के कितने भाई थे?
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार

९. सीता के स्वयंवर में लंका से कौन पहुँचा था?
(अ) विभीषण (ब) रावण (स) कुंभकरण (द) बालि

१०. समुद्र मंथन के समय मथनी किस पर्वत को बनाया?
(अ) हिमाचल (ब) सुमेरू (स) मंदराचल (द) नीलगिरि

(उत्तर इसी अंक में हैं)

डा.हेडगेवार की सहभागिता ने आन्दोलन को गति दे दी

सेकुलर गिरोह का एक घिसा-पिटा आरोप रहता है कि संघ के स्वयंसेवकों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग नहीं लिया। सचाई यह है कि स्वतंत्रता से पूर्व स्वयंसेवक जो प्रतिज्ञा लेते थे उसमें एक पंक्ति यह भी थी कि ***''अपने देश को स्वतंत्र कराने के लिये मैं स्वयंसेवक बना हूँ।''*** *संघ संस्थापक डा.हेडगेवार ने स्वयं अनेक सहयोगियों के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया था। भारत छोड़ो आंदोलन के समय तो सम्पूर्ण महाराष्ट्र में जत्थों की अगुवाई करने वाले स्वयंसेवक ही थे।*

गत ९ अगस्त को जब संसद में भारत छोड़ो आंदोलन की हीरक जयंती मनाई जा रही थी तो सेकुलरवादियों ने फिर वही उक्त आरोप संसद में तथा अखबारों में लगाया। ९ अगस्त के ही 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में सम्पादकीय पृष्ठ पर श्री राकेश सिन्हा का 'दिस डे, ७५ इयर्स अगो' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है। इसमें विद्वान टिप्पणीकार ने स्वयंसेवकों के स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागी होने के प्रमाण दिये हैं लेख के कुछ अंश इस प्रकार हैं –

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के निर्णय से (अंग्रेज) सरकार के सारे भ्रम दूर हो गये। मध्य प्रांत और बराड़ (उस समय का मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा गुजरात का क्षेत्र) पुलिस की पाक्षिक रपट में लिखा गया था, कि *संघ- संस्थापक डा.हेडगेवार की सहभागिता ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में नई जान फूंक दी है।* उन्होंने हजारों सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया तथा एक साल के सश्रम करावास की सजा भुगती।

५ अगस्त १९४० को भारतीय सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत केन्द्र सरकार ने संघ के गणवेश, संचलन व अन्य शारीरिक कार्यक्रमों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सैकड़ों स्वयंसेवकों ने इसके विरोध में सत्याग्रह कर गिरफ्तारी दी।

भारत छोड़ो आन्दोलन में संघ के भाग लेने से ब्रिटिश शासकों की कमर ही टूट गई। अगस्त १९४२ में चिमूर और आष्टि में स्वयंसेवकों ने आंदोलन का नेतृत्व किया। पुलिस का दमन भी इन दो तहसीलों में अत्यधिक था।

आजीवन कारावास तथा फाँसी की सजा पाने वालों में अधिकतर स्वयंसेवक ही थे। संघ की भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रियता ने ब्रिटिश सरकार की नींद उड़ा दी। सरकार में यह भय पैदा हो गया कि आजाद हिंद फौज के साथ मिल कर संघ कहीं सशस्त्र आन्दोलन न चला दे।

आज के इस सेकुलरवाद को कूड़े में डाल दो

सेकुलरवाद और सेकुलर गिरोहबाजों ने भारत को जितनी क्षति पहुँचाई है उतनी किसी अन्य शत्रु ने नहीं । यह एक जबर्दस्त पाखण्ड है जो एक वर्ग ने कई दशकों से ओढ़ रखा है। भारत में चल रहे सेकुलरवाद का एक ही अर्थ है-राष्ट्रहित की कीमत पर अल्पसंख्यकों (जिहादियों) का घोर तुष्टीकरण। देश के कुछ बुद्धिजीवी भी अब इसकी असलियत समझने लगे हैं। 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में गत ८ अगस्त को एक सम्पादकीय लेख ***'जंक टुडेज सेकुलरिज्म'*** *प्रकाशित हुआ है। 'दिव्य हिमाचल प्रकाशन' के अध्यक्ष श्री भानु धमीजा ने उक्त लेख लिखा है। प्रस्तुत हैं लेख के महत्वपूर्ण अंश –*

हमारे घटिया सेकुलरवाद ने कुछ लोगों का तुष्टीकरण तो किया है किन्तु भला किसी का नहीं किया है। हमारे समाज में एकता स्थापित करने के स्थान पर इसने देश के विभिन्न सम्प्रदायों में वैमनस्य उत्पन्न कर दिया है। इस समय भारत को एक नये सेकुलरवाद की जरुरत है जो पूजा-पद्धति की स्वतंत्रता, कानून के समक्ष सभी की बराबरी पर तथा स्टेट (सरकार) और रिलीजन के अलगाव पर आधारित हो। भारतीय सेकुलरवाद के असफल होने का एक कारण यह है कि हमने सभी समुदायों से समानता का व्यवहार नहीं किया। असफलता की यह कहानी तब शुरु हुई जब हमने 'हिन्दू कोड बिल' तो बना दिया किन्तु मुस्लिमों को शरीयत पर चलने की छूट दे दी।

नेहरु की सोच अव्यावहारिक थी इसलिये अब हमें वास्तविक सेकुलरवाद अपनाना चाहिये। कानून के समक्ष सभी सम्प्रदायों की समानता के लिये हमें **समान नागरिक संहिता** बनानी चाहिये। दूसरा 'भारतीय दण्ड संहिता' व अन्य कानूनों में मज़हबों को दिये गये सारे विशेषाधिकार समाप्त कर देने चाहिये। उदाहरण के लिये यदि कोई मुस्लिम महिला तलाक के बारे में कानून के सामने जाये तो उसे अन्य समुदायों की महिलाओं के समान ही अधिकार मिलने चाहिये।

गतिविधि

संकल्प ने किया प्रशासनिक सेवाओं में चयनित प्रतिभागियों का सम्मान

गत ४ अगस्त को संकल्प द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में चयनित प्रतिभागियों का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह जयपुर के इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान के मुख्य सभागार में रखा गया था।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री अरूण चतुर्वेदी थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री डी.बी.गुप्ता, अति. मुख्य सचिव तथा श्री नन्द किशोर अति. महानिदेशक पुलिस, राज. सरकार थे। कार्यक्रम में ३३ अभ्यार्थियों का सम्मान किया गया।

ज्ञात हो कि 'संकल्प' का संचालन 'जन कल्याण शिक्षा समिति' द्वारा किया जाता है। इसके अन्तर्गत सिविल सर्विसेज की परीक्षाओं की तैयारी करने वाले प्रतिभागियों को लिखित एवं साक्षात्कार परीक्षा की तैयारी के साथ आवासीय सुविधा भी उपलब्ध कराता है। इसकी स्थापना १९८६ को दिल्ली में हुई थी।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी – १. स, २.अ, ३. ब, ४.द, ५.स, ६. ब, ७. द, ८. स, ९. ब, १०.स

सह सरकार्यवाह ने केरल हत्याओं की न्यायिक जाँच की माँग की

संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले ने केरल में हो रही राजनैतिक हत्याओं की न्यायिक जाँच की माँग की है। वे गत ४ अगस्त को दिल्ली में पत्रकारों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के मार्गदर्शन में केरल की घटनाओं की जाँच की जानी चाहिये।

पत्रकार सम्मेलन में सह सरकार्यवाह ने केरल की वाममार्गी हिंसा का पूर्ण विवरण देते हुए बताया कि गत एक वर्ष में संघ के चौदह स्वयंसेवकों की हत्या की जा चुकी है। सन् १९६९ से हत्याकाण्डों का क्रम शुरु हुआ और अब तक तीन सौ स्वयंसेवक हिंसा का शिकार बन चुके हैं। यह कामरेडों की तालिबानी मानसिकता को दिखाता है। केरल में संवैधानिक ढांचा ध्वस्त हो चुका है। अतः वहाँ राष्ट्रपति शासन लगाने का विचार भी किया जा सकता है। श्री होसबोले ने यह भी कहा कि मार्क्सवादियों का जिहादियों से गठजोड़ बना हुआ है। दाएश (इस्लामिक स्टेट) में भर्ती होने वाले केरल के सर्वाधिक आतंकी हैं और उनमें भी कन्नूर जिले के सर्वाधिक हैं जो मार्क्सवादियों का गढ़ है।

उन्होंने प्रश्न किया कि असहिष्णुता का राग अलापने वाले केरल के हत्याकाण्डों पर मौन क्यों हैं? यही प्रश्न केन्द्रीय वित्त व रक्षा मंत्री श्री अरुण जेतली ने भी किया। वे ५ अगस्त को लाल गिरोह का २९ जुलाई को शिकार बने ई.राजेश के परिवार से मिलने गये थे। उन्होंने कहा कि जिस निर्दयता से राजेश को मारा गया उसने इस्लामिक स्टेट की क्रूरता को भी पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने पूछा कि अब कोई अपने अवार्ड, पुरस्कार, सम्मान आदि क्यों नहीं लौटा रहा?

जय श्रीराम कहा तो फतवा मिल गया

बिहार के जनता दल (युनाइटेड) के एक विधायक श्री फीरोज अहमद को जय श्रीराम कहने पर फतवा मिल गया है। पटना के मुफ्ती ने उनके खिलाफ फतवा जारी किया है। फतवे के उत्तर में श्री अहमद ने कहा कि वे फतवे से नहीं डरते और जय श्रीराम कहना बन्द नहीं करेंगे।

इस देश के हिन्दू अजमेर की दरगाह सहित अन्य भी कई दरगाहों, मजारों में जाते हैं और अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। हर साल रमजान के अवसर पर हिन्दू समाज के नेता रोजा-इफ्तार आयोजित करते हैं। इन अवसरों पर वे मुस्लिम टोलियाँ भी लगाते हैं। कभी किसी ने इस पर आपत्ति नहीं की। लेकिन एक मुस्लिम बन्धु ने 'जय श्री राम' कहा तो उसके खिलाफ फतवा दे दिया गया।

इसके बाद भी फतवा देने वाले सेकुलर और सहिष्णु या उदारवादी कहलाते हैं और हिन्दू समाज पर असहिष्णु होने का ठप्पा लगाया जाता है।

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी : दक्षिण, सव्यसाची, जावा, सरहिंद, महाकवि माघ, महाराजा त्रिलोचनपाल, चौदह (१४), राजा महेन्द्र प्रताप, हाड़ी रानी, कर्णावती (अहमदाबाद)

सरकारी स्कूल के बच्चों को नमाज पढ़ा रहे थे जिहादी

सरकारी स्कूल यदि मुस्लिम बहुल क्षेत्र में हो और उसमें शिक्षक भी अधिकांश कट्टरपंथी हो तो फिर जिहादियों की मर्जी ही वहाँ चलती है। स्कूल में पढ़ने वाले हिन्दू बालकों को भी नमाज पढ़नी पड़ती है। मेवात क्षेत्र में यही हो रहा है। ऐसी ही एक घटना दैनिक राष्ट्रीय सहारा (२ अगस्त) में प्रकाशित हुई है।

मेवात में **मढ़ी** के मॉडल स्कूल में ज्यादातर अध्यापक कट्टरपंथी हैं। वे सभी बालकों को स्कूल समय में ही कक्षाओं में नमाज पढ़ना सिखाते हैं। बीती २८ जुलाई को अध्यापक संतलाल से यह सहन नहीं हुआ और उसने हिन्दू बालकों को भी नमाज पढ़ाने पर आपत्ति की। अगले ही दिन आरिफ, मुबारिक और मोइनुद्दीन नाम के अध्यापकों ने संतलाल को स्कूल में प्रवेश द्वार के समीप ही बुरी तरह पीटा। गाँव के लोगों को यह पता लगा तो उन्होंने १ अगस्त को पुलिस थाने के सामने धरना दे दिया।

इसके बाद प्रशासन सक्रिय हुआ तथा मोइनुद्दीन और मुबारिक को निलम्बित कर दिया गया। आरिफ का स्थानांतरण दूर के एक स्कूल में किया गया।

रामायण काल का ही है राम सेतु- प्रो. रामास्वामी

अलगप्पा विश्वविद्यालय में सागर विज्ञान के प्रोफेसर श्री एस.एम. रामास्वामी ने कहा है कि रामेश्वरम् से श्रीलंका के बीच बना रामसेतु रामायण काल का ही है। तमिलनाडु के कराईगुडी में स्थित अलगप्पा विश्व वि. उत्कृष्ट शिक्षा के लिये जाना जाता है।

पूर्व की डा. मनमोहन सिंह की सरकार ने धनुषकोटि से श्रीलंका के तलाईमन्नार तक सागर के भीतर बने पुल को तोड़ने की योजना बनाई थी। इसके लिये तब की सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में यह हलफनामा भी दिया कि 'सरकार श्रीराम के अस्तित्व को ही नहीं मानती'। आखिर जनता की शक्ति के सामने सेकुलरवादी सरकार को झुकना पड़ा और श्रीराम सेतु को ध्वस्त करने की योजना रोकी गई। तभी से राम-सेतु की ऐतिहासिकता पर बहस शुरु हुई थी।

इतिहास, भूगर्भशास्त्र और सागर-विज्ञान के अनेक विद्वानों ने सिद्ध किया कि श्रीराम सेतु रामायण काल का है। 'भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्' ने भी श्रीराम सेतु पर शोध प्रकल्प प्रारम्भ किया है। प्रो.रामास्वामी ने इसका स्वागत करते हुए कहा कि इसके सभी पहलुओं पर विस्तार से शोध की जानी चाहिये। (द हिन्दू २ अगस्त)

माछिल के वीरों को आखिर न्याय मिला

पाथेय-कण के जुलाई (द्वि.) अंक में सेना के कर्नल पठानिया की दुर्दशा का समाचार प्रकाशित किया गया था। कर्नल और उनके राष्ट्र भक्त साथी जवान आजीवन कैद की सजा भुगत रहे थे। बीती ३१ जुलाई को सेना के ट्रिब्यूनल (आर्म्ड फोर्सेज ट्रिब्यूनल) ने उनकी सजा निलम्बित कर उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया।

ध्यान रहे कि ३० अप्रेल २०१० को कर्नल पठानिया की टुकड़ी ने तीन आतंकियों शहजाद खान, शफी लोन और रियाज लोन को मौत के घाट उतार दिया था। उस समय केन्द्र में सेकुलरवादी सरकार थी। सेकुलर बिरादरी भारतीय सेना की नम्बर एक की शत्रु है। अतः सेकुलरों ने शोर मचाया और कश्मीर पुलिस ने इन जवानों के खिलाफ केस बना दिया। झूठे-सच्चे प्रमाणों को भी जुटाया गया और राज्य पुलिस के इन साक्ष्यों के आधार पर सेना ने कोर्ट-मार्शल में इन जवानों को सजा सुना दी। कर्नल दिनेश पठानिया सहित उनकी टुकड़ी के मेजर उपेन्द्र, हवलदार देवेन्द्र कुमार, लांस नायक लखमी, लांस नायक अरुण कुमार तथा राइफल मेन अब्बास हुसैन शाह को आजीवन कारावास की सजा हो गई।

अब सेना के न्यायाधिकरण ने उनकी सजा निलम्बित करते हुए सभी को जमानत दे दी हैं। पूरे मामले की फिर से जाँच की जायेगी। इस निर्णय से सेकुलरों के पेट में बल पड़ गये हैं। इंडियन एक्सप्रेस जैसे अंग्रेजी के दैनिकों ने इस निर्णय पर सवाल खड़े करने शुरु कर दिये हैं। लेकिन सचाई को अधिक समय तक छिपा कर नहीं रखा जा सकता।

गुजरात के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री बंजारा तथा राजस्थान के पुलिस अधिकारी एम.एन.दिनेश भी सोहराबुद्दीन मुठभेड़ के झूठे आरोपों से मुक्ति पा गये हैं।

झारखण्ड में मतान्तरण पर रोक लगी

झारखण्ड सरकार ने मतान्तरण पर रोक सम्बन्धी कानून को स्वीकृति दे दी है। गत १ अगस्त को राज्य मंत्रिमण्डल ने यह 'रिलीजियस फ्रीडम बिल-२०१७' पास कर दिया है।

इस अधिनियम के अनुसार कोई व्यक्ति या समूह किसी अन्य व्यक्ति या समूह का रिलीजन बदलने का प्रयास करता है तो यह अपराध माना जायेगा। दबाव, धमकी या लालच से मतान्तरण का आरोप सिद्ध होने पर तीन साल की जेल तथा ५० हजार रु के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश में भी मतान्तरण पर रोक के कानून बन चुके हैं।

राज्य की ईसाई मिशनरियों ने इस कानून का विरोध भी प्रारम्भ कर दिया है। कई स्थानों पर पादरियों ने प्रदर्शन किये हैं।

स्वयंसेवक की हत्या के विरोध में पूरा केरल 'बन्द' रहा

केरल में कामरेड़ों की हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। गत २९ जुलाई को संघ के कार्यकर्ता ई.राजेश पर लाल गिरोह के आठ-दस बदमाशों ने तलवारों से हमला किया। बुरी तरह घायल और अंग-भंग हुए राजेश ने उसी स्थान पर दम तोड़ दिया। इसके विरोध में ३० जुलाई को ही पूरे केरल में 'बन्द' का आह्वान किया गया, जो पूर्ण रुप से सफल रहा।

इसी दिन कामरेडी हिंसा से दुखी केरल के राज्यपाल श्री पी.सदाशिवम् ने राज्य के मुख्यमंत्री तथा पुलिस महानिदेशक को हिंसक घटनाएं रोकने के निर्देश दिये। केन्द्रीय गृहमंत्री ने भी राज्य सरकार को हिंसा से सख्ती से निपटने का आग्रह किया। उधर केरल के हिन्दू समाज ने राष्ट्रपति महोदय को पत्र लिख कर हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है।

लव जिहाद का अड्डा बन गया है बुलन्दशहर

बुलंदशहर जिला (उ.प्र.) लव जिहाद का अड्डा बन चुका है। बुलंदशहर से मेरा एक परिचित परिवार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलने आया था। पति और पत्नी दोनों बहुत परेशान थे और वो मुझसे भी मिलने आए। उनकी व्यथा सुनकर मैं उन्हें डीजीपी सुलखान सिंह के पास ले गया। इस परिवार की कहानी सुनकर मैं हैरान हूँ। बुलंदशहर के पहासू और ककोड कस्बों में संभ्रांत हिंदू परिवारों की नाबालिक बच्चियां बीते १० दिन से गायब हैं। १० दिन से इन दोनों कस्बों में सांप्रदायिक तनाव है। बताया गया कि बुलंद शहर और एनसीआर के इस इलाके की सैकड़ों नहीं, बल्कि हजारों लड़कियाँ बरसों से गायब हैं। इनमें से ज्यादातर का आज तक कोई सुराग भी नहीं मिल सका है। बताया जाता है कि ये वो लड़कियां हैं जो लव जिहाद की साजिश का शिकार हो चुकी हैं। बुलंदशहर और आसपास के इलाकों में लव जिहाद एक संगठित अपराध के तरह उभर चुका है और ये अब भी जारी है।

अक्सर जब भी लव जिहाद का मामला उठता है मीडिया एक सोची-समझी साजिश के तहत इसे राजनीति से जोड़ देता है, ताकि असल समस्या से ध्यान भटकाया जा सके। दिल्ली से सौ किलोमीटर दूर गांवों में सैकड़ों की तादाद में नाबालिग लड़कियां गायब हो रही हैं लेकिन मीडिया इसे कभी नहीं दिखाता। ज्यादातर मामलों में शिकार लड़कियां नाबालिग थीं और शिकायत करने पर उनके माता-पिता को जान से मारने तक की धमकियां मिलती हैं। लेकिन मीडिया के कारण पूरे देश में ऐसा माहौल है कि लव जिहाद सिर्फ सांप्रदायिक धुव्रीकरण के लिये इस्तेमाल होने वाला मुद्दा है।

पश्चिमी यूपी के तमाम शहरों में ऐसे मामले अब भी लगातार सामने आ रहे हैं जिनमें मुसलमान लड़के हिंदू नामों से हिन्दू लड़कियों को फंसाते हैं और बाद में उनको ब्लैकमेल करके शादी कर लेते हैं। शादी से पहले लड़कियों को बाकायदा मुसलमान बनाया जाता है। बाद में इन लड़कियों को तीन बार तलाक बोलकर छोड़ दिया जाता है।

-सूर्य प्रताप सिंह (पूर्व आई.ए.एस.उ.प्र.)

अन्य देशों के स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

अन्य देशों में रह रहे स्वयंसेवक 'हिन्दू स्वयंसेवक संगठन' के नाम से हिन्दू संगठन कार्य करते हैं। समय-समय पर हि.स्व.सं. के प्रशिक्षण वर्ग, शिविर भी आयोजित होते हैं। इसी प्रकार के दो प्रशिक्षण वर्ग पिछले दिनों भारत में सम्पन्न हुए। हि.स्व.सं. का बीस दिनों का वर्ग १५ जुलाई से ५ अगस्त तक सूराबर्डी (नागपुर) में तथा हिन्दू सेविका समिति का १५ दिनों का वर्ग नागपुर के ही रेशिम बाग में आयोजित किये गये। इन दो वर्गों में विश्व के तेरह देशों के बन्धु-भगिनियों ने भाग लिया।

इन वर्गों की विशेषता यह थी कि इनमें संस्कृत सम्भाषण, वैदिक गणित, प्राचीन भारत का विज्ञान और भगवद्गीता भी प्रशिक्षण के विषयों में शामिल थे। दोनों वर्गों का अलग-अलग पथ-संचलन २९ जुलाई को हुआ। समापन समारोह दोनो वर्गों का ४ अगस्त को रेशिम बाग में रखा गया था। समारोह के मुख्य अतिथि प्रमुख अर्थशास्त्री तथा नीति आयोग के सदस्य श्री बिबेक देवराय थे।

सरसंघचालक भागवत जी तथा प्रमुख संचालिका (सेविका समिति) शांतक्का जी ने प्रशिक्षणार्थी बन्धु-भगिनियों तथा नागपुर की आमंत्रित जनता को सम्बोधित किया। अर्थशास्त्री देवराय ने अपने भाषण में बताया कि 'धर्म'और 'रिलीजन' अलग-अलग हैं तथा रिलीजन का अर्थ धर्म नहीं है। धर्म एक बड़ा और व्यापक विचार है, जबकि मज़हब या रिलीजन का सम्बन्ध पूजा करने की विधि से है।

प्रोफेसर का हाथ काटने वाला जिहादी सात साल बाद पकड़ा गया

सात साल पहले केरल के एक कॉलेज व्याख्याता का हाथ काटने वाले जिहादी मंसूर को गत ५ अगस्त को राष्ट्रीय अन्वेषण एजेंसी (एन आई ए) ने गिरफ्तार कर लिया। मुवत्तुपुझा (केरल) के न्यूमेन कालेज में पढ़ाने वाले श्री टी.जे.जोसफ का कक्षा में पढ़ाते समय ही जिहादियों ने दायां हाथ कलाई से काट दिया था।

घटना ४ जुलाई २०१० की है। उनका अपराध यह था कि उन्होंने कॉलेज की परीक्षा में पैगम्बर हजरत मोहम्मद के बारे में एक प्रश्न पूछ लिया था। उसी से जिहादी उनसे खफा हो गये और दिन-दहाड़े पढ़ाते हुए उनका हाथ काट दिया।

४ जुलाई २०१० को कोई १५-२० जिहादी न्यूमेन कॉलेज में तलवारें लिये घुसे। उन्होंने प्रो.जोसेफ को कक्षा में पढ़ाते हुए खोज निकाला और वहीं मेज पर जबरन उनका हाथ टिका कर कलाई से उसे काट डाला। लेकिन सेकुलर गिरोह के किसी भी ज्ञानी ने इस घटना की निन्दा नहीं की। किसी ने अभिव्यक्ति की आजादी की आवाज नहीं उठाई और न ही कोई जन्तर-मन्तर पर मुँह पर पट्टी बाँध विरोध करने आया।

उत्तर पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं - तात्या टोपे

जिहादियों की मनमानी-अब शतरंज पर फतवा

भारत के लिये क्रिकेट खेलने वाले मोहम्मद कैफ पिछले दिनों कट्टरपंथियों के शिकार बन गये। अपने बेटे के साथ शतरंज खेलते हुए का फोटो उन्होंने फेसबुक पर डाल दिया। अब इस्लाम में शतरंज खेलना 'हराम' माना जाता है, हालांकि उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान, किरगिजिस्तान आदि मुस्लिम देशों में जम कर शतरंज खेली जाती है। लेकिन भारत में यह हराम है, इसलिये जिहादियों ने उनके खिलाफ अभियान छेड़ दिया।

दैनिक 'टाइम्स ऑफ इण्डिया'(२९ जुलाई) के अनुसार रात नौ बजे तक अनेकों जिहादियों ने उनकी निन्दा करने वाले संदेश भेज दिये। अन्य क्रिकेटरों मोहम्मद शमी और इरफान पठान को भी ऐसे ही निन्दा-युक्त संदेश मिले हैं।

विचार करने का विषय यह है कि यह असहिष्णुता है या नहीं? यह लोगों की आजादी पर हमला है या नहीं? वास्तव में भारत में व्यक्तिगत आजादी पर हमला कर असहिष्णुता कोई फैला रहा है तो वे जिहादी और मुल्ला-मौलवी हैं।

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति डा. हामिद अंसारी ने कार्यकाल समाप्त होने के एक दिन पहले कहा कि 'मुसलमान देश में असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। सेकुलर बिरादरी को यही दृष्टिरोग है और यही भ्रम वह सौ सालों से फैला रही है। उक्त घटना जैसी अनेक घटनायें हर दिन होती रहती हैं और उनसे तो यही सिद्ध होता है कि जो भी खतरा देश को और उदार विचारों को है वह जिहादियों से है।

भगिनि निवेदिता का मकान स्मारक बनेगा

भगिनि निवेदिता का लंदन का वह मकान जिसमें वे भारत आने से पूर्व रहती थीं अब स्मारक बनेगा। उनकी १५० वीं जयंती के अवसर पर एक नाम-पट्टिका का अनावरण लंदन में किया जायेगा।

स्वामी विवेकानन्द की शिष्या भगिनि निवेदिता आयरलैण्ड की थीं और उनका नाम मार्गरेट नोबुल था। उनका जन्म २८ अक्तूबर १८६७ के दिन हुआ था। वर्ष २०१७-१८ उनके जन्म के सार्द्ध-शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जायेगा। शिकागो की धर्म-सभा में हिन्दू धर्म की विश्व-विजय का ध्वज फहराने के बाद स्वामी विवेकानन्द जब लंदन आये तो मार्गरेट नोबुल उनकी सभाओं में आने लगीं। यहीं वे हिन्दू-धर्म के सिद्धान्तों से प्रभावित हुईं और १८९८ के शुरु में भारत आ गईं। उनके अनुरोध पर स्वामी विवेकानन्द ने उन्हें दीक्षा दे उनका नाम निवेदिता रखा। इसके बाद का शेष जीवन भगिनि ने नारी-शिक्षा, वंचितों की सेवा और भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय योगदान देते हुए बिताया। इंगलैण्ड के जिस स्कूल में भगिनि पढ़ती थी उसे पहले ही स्मारक का रूप दिया जा चुका है।

महान भक्त कवि रामब्रह्म त्यागराज

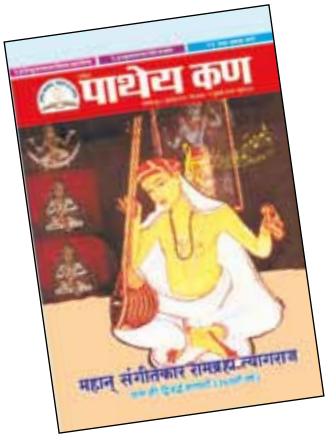

अंक संदर्भ : १ जुलाई २०१७

१ जुलाई के अंक में महान संगीतकार त्यागराज पर दी गई आमुख कथा पढ़ी। कर्नाटक संगीत के पुरोधा कहे जाने वाले त्यागराज ने रामभक्ति के माध्यम से समाज में जन-जागरण का कार्य किया। ऐसे महान भक्त-कवि तथा संगीतकार का समस्त जीवन हिन्दू समाज के लिये प्रेरणादायक है।

-लालचन्द मेवाड़ा, *हुरड़ा (भीलवाड़ा)*

संत त्यागराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे केवल संगीत के ही नहीं वेदों, संस्कृत और ज्योतिष शास्त्र के भी ज्ञाता थे। विलक्षण प्रतिभा के धनी ऐसे महापुरुषों की जानकारी आम पाठक तक पहुँचाना सराहनीय कार्य है।

-अमरसिंह, *अजमेर रोड़, जयपुर*

रामभक्त और महान संगीतकार त्यागराज के बारे में प्रथम बार पाथेय कण में पढ़ा। सनातन संस्कृति की परम्परा के वाहक के रूप में उनको तमिलनाडु में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत में स्मरण किया जायेगा।

-पुष्कर शर्मा, *कनेरा (चित्तौड़गढ़)*

संगीतकार त्यागराज पर दिया गया लेख विशेष रुचिकर लगा। विलक्षण प्रतिभा से युक्त ऐसे महापुरुष केवल भारत-भूमि पर जन्म लेते हैं। इसीलिए तो भारतीय संस्कृति को महान कहा गया।

-जगमोहन पारीक, *सुरसरा (अजमेर)*

पाथेय कण के माध्यम से ही महान संगीतकार त्यागराज के जीवन के बारे में जानने का अवसर मिला। हमें गर्व होता है हमारी संगीत परम्परा पर जिसके कारण भारत की विश्व से अलग पहचान बनी।

-शिखर त्रिवेदी, *उदयपुर*

सामयिक संपादकीय

अंक में दिया गया संपादकीय 'पयपानम् भुजंगानाम् केवलम् विषवर्धनम्' सामयिक लगा। राष्ट्रद्रोहियों की वास्तविकता को पूरा देश अब समझ रहा है। राजनैतिक सिरपरस्तों के सहारे पले-बड़े ऐसे अलगावादियों पर अब रोक लगनी चाहिये।

-टेकचन्द शर्मा, *झुन्झुनू*

भाषा का स्वाभिमान

अंक में बाल-मित्रों के स्तम्भ में 'क्या आपके देश की कोई भाषा नहीं है' दी गई बोध कथा पढ़ी। जो व्यक्ति अपनी मातृभाषा से प्यार नहीं करता वह अपनी जन्मभूमि की रक्षा भी नहीं कर सकता, यही इस कथा का सार है।

-पुरूषोत्तम शर्मा, *माकड़ रोड़ (अजमेर)*

आपातकाल के संस्मरण

अंक में आपातकाल के संस्मरण पढ़कर बहुत अच्छा लगा। तत्कालीन सरकार ने सत्ता में बने रहने के लिए किस-किस प्रकार के हथकंडे अपनाये यह उक्त संस्मरणों से पता चलता है। आपातकाल की वास्तविकता से युवा पीढ़ी को परिचय कराने का प्रयास स्तुत्य है।

-ईश्वरलाल धाकड़, *बड़ी सादड़ी(चित्तौड़गढ़)*

आपातकाल के संस्मरणों से जहाँ सत्ता पिपासु इंदिरा गांधी द्वारा देश में चलाये गये दमन चक्र का पता चलता है तो दूसरी ओर साहस और धैर्य के साथ स्वयंसेवकों व जनता द्वारा किये गये प्रतिरोध का। यह आम जनता की विजय और निरंकुश इन्दिरा की करारी हार के भी प्रतीक हैं।

-रामावतार मित्तल, *सवाईमाधोपुर*

योग दिवस के आकर्षक चित्र

विश्व भर में मनाये गये योग दिवस के चित्र आकर्षक लगे। देश-विदेशों में योग दिवस पर जिस उत्साह से आम जन ने कार्यक्रमों में भाग लिया वह अकल्पनीय है।

-जतिन जांगिड़, *बिचून (जयपुर)*

इसरो की सफलता

१ जुलाई के अंक में भारत के वैज्ञानिकों की सफलता का समाचार पढ़ा। भारतीय वैज्ञानिकों ने एक साथ इकतीस उपग्रह पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर जो महान कार्य किया है वह देश की सुरक्षा के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा।

-श्यामलाल लखारा, *बावड़ी (जोधपुर)*

नक्सलियों का कुकृत्य

उड़ीसा में नक्सलियों द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार में लगे डाक्टर सामंत को धमकाने का समाचार पढ़कर मन उद्वेलित हो गया। अलगाववादी क्षेत्र के विकास के नाम पर केवल अपनी रोटी सेकना चाहते हैं। ये लोग शैक्षिक विकास में बाधक बनकर तथा वनवासियों को भ्रमित कर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलग्न करना चाहते हैं।

-प्रवीण रावत, *पादरडीबड़ी (डूंगरपुर)*

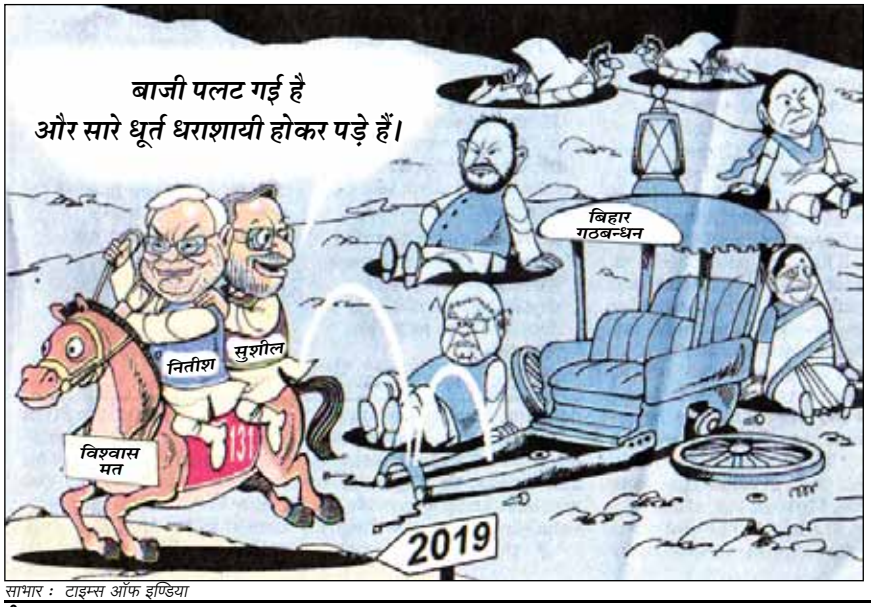

साभार : टाइम्स ऑफ इण्डिया